Mkd?kjksa esa lapkfyr efgyk ç/kku {ks=h; cpr ;kstuk vfHkdj.ki.kkyh dk eY;kadu v/;;u

¼ jktLFkku dsdkVk lHkkx ds fo'ks"k lUnHkZ esa½

Øe l[;k	fooj.k
1.	परिचय
2.	महिला प्रधान क्षेत्रीय बचत योजना
3.	अध्ययन की आवश्यकता
4.	समस्या का विधान
5.	साहित्य की समीक्षा
6.	अनुसंधान अंतराल
7.	अध्ययन के उद्देश्य
8.	परिकल्पना
9.	शोध प्रविधि
10.	अध्ययन की अवधि
11.	अध्ययन की सीमाएँ
12.	अध्याय योजना
13.	संदर्भ

ifjp;

किसी अर्थव्यवस्था की वृद्धि और विकास के लिए बचत और निवेश प्रमुख आवश्यकताएं होती हैं। हालाँकि, विकासशील देशों में बचत और निवेश की कमी पाई जाती है। उच्च बेरोजगारी, कम मजदूरी, अनौपचारिक क्षेत्र में आबादी के एक बडे हिस्से की भागीदारी और अर्थव्यवस्था के खराब प्रदर्शन के कारण विकासशील अर्थव्यवस्था में घरेलू बचत के निम्न स्तर का मुद्दा एक बडी समस्या है। बचत और निवेश के बीच परस्पर क्रिया व्यापक अर्थशास्त्रियों के बीच बहुत रुचि और बहस का विषय बन गई है। पारंपरिक तरह से यह कहा जा सकता है कि निवेश और उसके बाद के आर्थिक विकास को बढावा देने के लिए बचत एक आवश्यक तत्व है। आर्थिक वृद्धि को विस्तार की दर के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो किसी अविकसित देश को अपेक्षाकृत कम समय में, यानी सदियों की बजाय दशकों में लगभग निर्वाह योग्य जीवन शैली से काफी ऊंचे स्तर पर ले जा सकता है।

बचत करना केवल खर्च न करना नहीं है। इसमें वर्तमान और भविष्य की संतुष्टि के बीच एक सचेत विकल्प शामिल होता है। यह जानबूझकर निर्णय लेने से जुडे एक सकारात्मक कार्य का प्रतिनिधित्व करता है। कुछ ऐसे उद्देश्य हैं जो व्यक्तियों को बचत में संलग्न होने के लिए मजबूर करते हैं। बचत एक परिवार की अप्रत्याशित आकस्मिकताओं को पूरा करती है। व्यक्ति या उसके परिवार की आय और जरूरतों के बीच प्रत्याशित भविष्य के संबंध के लिए बचत की आवश्यकता होती है जो वर्तमान में मौजूद है जैसे बुढापे की सुरक्षा, पारिवारिक शिक्षा या आश्रितों का भरण–पोषण अधिकांश लोग छोटी तात्कालिक खपत की तुलना में बाद की तारीख में बडी वास्तविक खपत खरीदना पसंद करते हैं। यह बचत के कारण ही संभव है। जो व्यक्ति अपना जीवन स्तर सुधारना चाहते हैं, वे निश्चित रूप से अपनी बचत

बढाना चाहते हैं। यह निश्चित है कि बचत से स्वतंत्रता की भावना और काम करने की शक्ति पैदा होती है।

औपचारिक क्षेत्र में मध्यम वर्ग के लोगों की बचत अधिकतर अनिवार्य बचत के रूप में होती है। सरकार उन्हें भविष्य निधि, पारिवारिक लाभ योजना, बीमा पॉलिसियों के रूप में बचत करने के लिए प्रोत्साहित करती है। परंतु अफसोस की बात है कि सरकार मध्यम वर्ग को अनिवार्य रूप से बचत तो कराती है, लेकिन बचत के वास्तविक मूल्यों की रक्षा के लिए कुछ नहीं करती। जैसे–जैसे मुद्रास्फीति की दर का ऊंची हो जाना, बचत के पैसे के गिरते मूल्य को अनुक्रमित करने के लिए कुछ भी नहीं किया जाता है। पैसे के गिरते मूल्य के बावजूद उच्च वर्गों के पास लगभग पूरी बचत होती है। वे आभूषण और कीमती धातुओं में निवेश करते हैं। वे इस बचत को गिल्ट–एज्ड प्रतिभूतियों में भी निवेश करते हैं।

efgyk ç/kku {k=h; cpr ;ktuk

महिला प्रधान क्षेत्रीय बचत योजना (एमपीकेबीवाई) अभिकरण प्रणाली सरकार द्वारा 01.04.1972 से शुरू की गई थी। इस योजना के निम्नलिखित उद्देश्य थे

1. गृहिणियों को पारिवारिक बजट बनाने के बारे में शिक्षित करना।

2. घरेलू और स्व–रोजगार वाले लोगों में बचत की आदत विकसित करना।

3. छोटे बचतकर्ताओं से राष्ट्रीय बचत 5 वर्ष के आवर्ती जमा खाते में निवेश के लिए प्रचार करना और उसे सुरक्षित करना।

4. देश के विकास और रक्षा के वित्तपोषण के लिए संसाधन जुटाना।

अभिकरणप्रणाली राष्ट्रीय बचत 5 वर्ष के आवर्ती जमा खाते में निवेश के लिए प्रचार करने और प्राप्त करने तक ही सीमित है। एक व्यक्तिगत महिला (जिसे महिला अभिकर्ता कहा जाता है जो इलाके की निवासी है और पर्याप्त रूप से शिक्षित है, को इस योजना के तहत अभिकर्ता नियुक्त किया जा सकता है।

नियुक्ति, नवीनीकरण और पर्यवेक्षण सहित अधिकृत अभिकरण प्रणाली का प्रबंधन राज्य सरकार को हस्तांतरित कर दिया गया है। अभिकरण प्रणाली के तहत एक अभिकर्ता के रूप में नियुक्त होने के इच्छुक व्यक्ति को अपने क्षेत्र के नियुक्ति प्राधिकारी यानी राज्य के निदेशक, अल्प बचत, उस जिले के जिला कलेक्टर से संपर्क करना चाहिए जहां आवेदक रहता है। कुछ राज्यों में बीडीओ एवं तहसीलदारों को एमपीकेबीवाई के तहत नियुक्ति प्राधिकारी के रूप में भी नामित किया गया है। अधिकृत अभिकर्ता राष्ट्रीय बचत 5 वर्ष के आवर्ती जमा खाते में उनके द्वारा सुरक्षित जमा पर सरकार द्वारा समय– समय पर अधिसूचित दर पर कमीशन के भुगतान के हकदार है एमपीकेबीवाई के तहत नियुक्त अभिकर्ता को नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा अभिकर्ता का विवरण और अभिकृर्तत्व की वैधता दिखाने वाला प्राधिकरण का प्रमाण पत्र जारी किया जाता है।

इस प्रणाली के तहत नियुक्त अधिकृत अभिकर्ता को सरकार द्वारा कार्ड जारी किए जाते हैं। किसी अभिकर्ता के माध्यम से राष्ट्रीय बचत 5 वर्षीय आवर्ती जमा खाते में जमा करते समय निवेशक को अभिकर्ता से निर्धारित मुद्रित कार्ड प्राप्त करने के लिए आग्रह करना चाहिए। अभिकर्ता डाकघर में राष्ट्रीय बचत 5 वर्षीय आवर्ती जमा खाते में जमा किए जाने वाले हर महीने प्राप्त धन के लिए जमाकर्ता के कार्ड की प्रति में प्रविष्टि करता है। जमाकर्ता को सलाह दी जाती है कि जमा करने के बाद

अभिकर्ता द्वारा लौटाए जाने पर अपने खाते की पासबुक में जमा की प्रविष्टियों की जांच कर लेनी चाहिए।

jk"Vªh; cpr ;kstuk ds rgr laxzg fn[kkus okyk fooj.k

o"kZ	ldy ¼tek½	fudklh	’kq)
2017	592710.36	435596.49	157113.87
2018	680021.32	468017.53	212003.79
2019	846660.75	566385.82	280274.93
2020	937355.25	631985.78	305369.47
2021	797623.78	577364.65	220259.13

https://nsiindia.gov.in/InternalPage.aspx?Id_Pk=152

v/;;u dh vko’;drk

भारतीय अर्थव्यवस्था निवेश के रूप से बढरही है और इसमें निवेश के विभिन्न विकल्प मौजूद है। लेकिन भारत सरकार ने निवेश का सबसे पुराना विकल्प उपलब्ध कराया हैं फिर भी डाक बचत योजनाओं को अधिक महत्व नहीं मिल पाया है। बदलता डाक परिवेश पारंपरिक डाक व्यवसाय के लिए एक बडी चुनौती प्रस्तुत करता है। यह नए व्यावसायिक विकल्पों और अवसरों की एक विशाल श्रृंखला भी बनाता है, क्योंकि डाक योजनाओं द्वारा प्रदान की जाने वाली अन्य योजनाओं की तुलना में ब्याज दर अधिक होती है। वर्तमान अध्ययन यह विश्लेषण करने के लिए किया गया है कि क्या डाक बचत योजनाओं को निवेशकों के बीच महत्व मिला है या नहीं इसलिए यह अध्ययन डाकघर बचत योजनाओं के प्रति जमाकर्ता के दृष्टिकोण को जानने में मदद करता है।

lelL;k dk fo/kku

भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था है जहाँ विभिन्न प्रकार के लोग, अमीर और गरीब रहते हैं। विशाल आकार और लगभग 140 करोडकी आबादी के कारण, भारत की जीडीपी दुनिया की शीर्ष 5 अर्थव्यवस्थाओं में शुमार है। हालांकि,लगभग 20 करोडपरिवार गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहे हैं। यह अनुमान लगाया गया है कि इन परिवारों में से केवल 20 प्रतिशत के पास ही औपचारिक क्षेत्र से ऋण तक पहुंच है। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण आबादी का वह वर्ग गरीबी रेखा से ऊपर है, लेकिन इतना समृद्ध नहीं है कि औपचारिक वित्तीय संस्थानों में रुचि ले सके, बचत सेवाओं सहित औपचारिक वित्तीय मध्यस्थ सेवाओं तक भी उसकी अच्छी पहुंच नहीं है।

भारत में बचत सेवाओं की मांग ऋण की तुलना में कहीं अधिक है। भारत के विभिन्न राज्यों में ग्रामीण परिवारों के आंकडों के अध्ययन से पता चलता है कि गरीब, विशेषकर महिलाएं, जब भी संभव हो छोटी रकम बचाने का रास्ता तलाश करती हैं। नकदी प्रवाह की अनियमितता और एक समय में बचत के लिए उपलब्ध छोटी रकम, उन्हें बैंकों जैसे औपचारिक चैनलों का उपयोग करने से रोकती है। गरीब विभिन्न कारणों से बीमारी, आपदाओं, परिवार में मृत्यु आदि जैसी आकस्मिकताओं से बचने के लिए बचत करना चाहता है।

lkfgR; dh leh{kk

ekfgnj flag ¼2020½

भारतीय डाकघर बचत बैंक देश का सबसे बडा बचत संस्थान होने के नाते विशेष रूप से देश के ग्रामीण हिस्से में बचत जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और निवेशकों को कई लाभ प्रदान करता है। डाकघर की लघु बचत योजनाएं, जिन्हें कभी जन आंदोलन के रूप में जाना जाता था, ग्रामीण परिवारों के लिए महत्व खो रही हैं। इस पेपर में डाकघर बचत योजनाओं के प्रति निवेशक के व्यवहार का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। हिमाचल प्रदेश के तीन जिलों के 140 उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं के आधार पर अध्ययन में पाया गया कि सरकार द्वारा सुरक्षित रिटर्न की गारंटी और कर प्रोत्साहन के कारण समाज के ज्यादातर वेतनभोगी वर्ग का झुकाव डाकघर योजनाओं की ओर है। आवर्ती जमा, डाकघर बचत बैंक और डाकघर मासिक आय योजनाएं निवेश के मुख्य साधन हैं।

dwyh vkSj fofy;elu ¼2019½ शोधार्थियों ने व्यवसाय द्वारा औसत बचत दरों को प्रभावित करने में आय के स्तर के महत्व का अध्ययन करने के लिए विकासशील अर्थशास्त्र में घरेलू बचत व्यवहार विषय पर अध्ययन किया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि किसान, सरकारी कर्मचारी और शहरी वेतनभोगी सभी नकारात्मक बचतकर्ता है, जबकि व्यापारी कारीगर और व्यवसायों के मालिकों के पास औसत बचत अनुपात है।

'kkfryky l#fç;k ¼2018½ ने अपने केस स्टडी, इंडिविजुअल सेविंग्स इन एन अविकसित इकोनॉमी इंडिया में भारत जैसी अविकसित अर्थव्यवस्था में किसी व्यक्ति के बचत व्यवहार के बारे में कुछ व्यापक रूप से प्रचलित विचार देने का प्रयास किया है और संभावित बचत के तरीकों का सुझाव दिया है इस अध्ययन से पता चला है कि शेयर, प्रतिभूतियां, बीमा प्रीमियम, बैंक जमा और छोटी बचत जैसी उत्पादक संपत्तियां निवेशकों के पास कुल घरेलू बचत का लगभग 25 प्रतिशत है।

सोना, मुद्रा और टिकाऊ वस्तुएं जैसी अनुत्पादक परिसंपत्तियों ने शेष 75 प्रतिशत बचत को आकर्षित किया। अध्ययन में यह भी पाया गया कि भारतीय परिवारों में बचत का कार्य महिलाओं का कर्तव्य था, जो पुरुषों की तुलना में काफी हद तक अशिक्षित और अधिक परंपरा से जुडी हुई थीं भारत में, अत्यधिक अनिश्चित आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक स्थिति, मानसून प्रधान कृषि बडे पैमाने पर लोगों को बचत करने के लिए एक मजबूत प्रोत्साहन प्रदान करती है।

t l iky flg vkj lHkk"k pnj ¼2016½ ने अपने अध्ययन, म्यूचुअल फंड में निवेश के लिए निवेशकों की प्राथमिकता में इस सवाल का जवाब देने का प्रयास किया है, पीपीएफ जैसे निवेश पर गिरती ब्याज दर की अवधि के दौरान एक छोटे निवेशक को क्या निवेश विकल्प चुनना चाहिए एनएसआई, बैंक जमा आदि, जबकि पूंजी बाजार में प्रत्यक्ष निवेश एक महंगा प्रस्ताव है और छोटी बचत में पैसा रखना भी उचित नहीं है? अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि सबसे अच्छे विकल्पों में से एक म्यूचुअल फंड के माध्यम से पूंजी बाजार में निवेश करना है, जिससे निवेशक को प्रत्यक्ष निवेश में शामिल जोखिमों से बचने में मदद मिलेगी।

uxk vkj LVkYVt ¼2015½ ने अपने अध्ययन में, विकासशील देशों में गरीब परिवारों के बचत व्यवहार का एक विश्लेषण किया है। सामान्य रूप से घरेलू बचत का निर्धारण करने वाले कारकों की पहचान करना विकासशील देशों में परिवारों द्वारा बचत की कमी के लिए जिम्मेदार कारकों पर चर्चा करना अध्ययन की अवधि के लिए दक्षिण अफ्रीका में घरेलू बचत का एक सिंहावलोकन प्रदान करना दक्षिण अफ्रीका में अनौपचारिक बचत संस्थानों की भूमिका और महत्व की जाँच करना दक्षिण अफ्रीका के साथ पूर्वी एशियाई देशों के अनुभवों की तुलना करना और बचत संस्कृति बनाने के लिए रणनीतियों का सुझाव देना जिससे गरीब परिवारों के जीवन

की गुणवत्ता में सुधार होगा। इस वर्णनात्मक जांच में, यह स्पष्ट था कि घरेलू बचत व्यवहार के पारंपरिक सिद्धांत वास्तव में विकासशील देशों में कम आय वाले परिवारों के बचत व्यवहार की व्याख्या नहीं करते हैं। यह भी स्पष्ट है कि अधिकांश गरीब परिवारों के पास बचत करने की क्षमता है लेकिन दी जाने वाली वित्तीय सेवाओं को नियंत्रित करने वाली शर्तों के कारण औपचारिक वित्तीय संस्थानों तक उनकी पहुंच नहीं है।

ukjk;.k ¼2015½ ने अध्ययन के दौरान ग्रामीण और शहरी परिवारों की आय बचत और निवेश पर आंकडे एकत्रित कर अध्ययन किया है। इस अध्ययन के माध्यम से शोधार्थी द्वारा यह निष्कर्ष निकाला गया कि ग्रामीण परिवारों का औसत बचत आय अनुपात 15 प्रतिशत है एवं शहरी परिवारों के लिए यह अनुपात 16 प्रतिशत है इस रिपोर्ट के माध्यम से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि ग्रामीण परिवारों की बचत की सीमांत प्रवृत्ति 41.8 प्रतिशत है जबकि शहरी परिवारों की बचत की सीमांत प्रवृत्ति 33.1 प्रतिशत है।

vuqla/kku varjky

पिछले अध्ययनों का ध्यान बचत और बचत को प्रभावित करने वाले कारकों, छोटी बचत के महत्व और ग्रामीण क्षेत्रों में बचत में सुधार के महत्व, पीओएसएस के बारे में जागरूकता और निवेश पेटर्न पर निवेशकों के दृष्टिकोण जैसे मुद्दों पर केंद्रित रहा है। यह ध्यान दिया गया है कि पीओएसएस पर जमाकर्ताओं के रवैये, संतुष्टि के स्तर पर ध्यान केंद्रित करने वाला कोई अध्ययन नहीं किया गया है। डाकघरों में जमाकर्ता और सुविधाएं, विशेष रूप से कोटा संभाग से संबंधित इसलिए, यह अध्ययन इस शोध अंतर को भरने के प्रयास में किया गया है।

v/; ;u dk mís’;

इस अध्ययन के लिए निम्नलिखित उद्देश्य तैयार किये गये हैं।

1. डाकघर के बारे में एक सिंहावलोकन करना।

2. डाक योजनाओं के प्रदर्शन का मूल्यांकन करना।

3. डाकघर में महिला प्रधान क्षेत्रीय बचत योजना के प्रति जमाकर्ताओं के रुझान का विश्लेषण करना।

4. डाक योजनाओं के प्रति जमाकर्ताओं की संतुष्टि जानना।

5. अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर डाकघर बचत योजनाओं में सुधार के उपाय सुझाना।

ifjdYiuk

1. डाकघर की बचत से आम आदमी में बचत की प्रवृति मे सकारात्मक वृद्धि होती है

2. डाकघर में महिला प्रधान क्षेत्रीय बचत योजना से महिलाओं की बचत करने की प्रवृत्ति मे सकारात्मक प्रभाव पडता है।

3. डाकघर में महिला प्रधान क्षेत्रीय बचत योजना से महिलाओं के सशक्तिकरण मे वृद्धि हुई है।

’kks/k çfof/k

यह अध्ययन मुख्य रूप से प्राथमिक और द्वितीय आंकडों पर आधारित अनुभवजन्य प्रकृति का है।

vkdMk dk laxg.k

इस अध्ययन में प्राथमिक आँकडे प्रश्नावली की सहायता से एकत्रित किये गये। इसमें अनुसंधान पर्यवेक्षक, अनुसंधान विशेषज्ञों, डाकघर के कर्मचारियों और अनुभवी अभिकर्ताओं के साथ परामर्श किया गया। फिर प्रश्नावली का कच्चा प्रारूप तैयार किया गया। पर्यवेक्षक, अनुसंधान विशेषज्ञों और डाकघर के कर्मचारियों द्वारा दिए गए सुझावों पर विचार करने के बाद, प्रश्नावली को संशोधित किया गया और अंतिम मसौदा तैयार किया गया हैं। इस ड्राफ्ट का 30 जमाकर्ताओं के साथ पूर्व परीक्षण किया गया था। पायलट अध्ययन का उद्देश्य प्रश्नों की गुणवत्ता का परीक्षण करना और अध्ययन की व्यवहार्यता की पुष्टि करना था। उसके बाद प्री–टेस्ट के सुझावों को ध्यान में रखा गया, पुनर्गठित प्रश्नावली तैयार की गई और प्राथमिक डेटा एकत्र करने के लिए इसका उपयोग किया गया।

द्वितीयक डेटा विभिन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं, प्रकाशित और अप्रकाशित दस्तावेजों से एकत्र किया गया था। अन्य प्रकार के आंकडों के लिए डाक विभाग के कर्मचारियों और क्षेत्र के जानकार लोगों के साथ कई चर्चाएं की गई।

fo’y"k.k d midj.k

आंकडों के विश्लेषण के लिए निम्लिखित उपकरण उपयोग में लिए गए हैं

चक्रवृद्धि वृद्धि दर का उपयोग कोटा संभाग के डाकघरों में नौ वर्षों के लिए जमाकर्ताओं द्वारा जमा राशि का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। चक्रवृद्धि वृद्धि दर की गणना चक्रवृद्धि वृद्धि दर सूत्र का उपयोग करके की जाती है।

çfr'kr fo'y"k.k

जनसांख्यिकीय कारकों के लिए प्रतिशत विश्लेषण का उपयोग किया जाता है।चयनित चर और डाकघर की सुविधाओं की संतुष्टि के बीच महत्वपूर्ण संबंध, डाकघर में जमाकर्ताओं की संतुष्टि और बचत के प्रति जमाकर्ताओं के रवैये का विश्लेषण मैन– व्हिटनी टेस्ट और क्रुस्कल–वालिस टेस्ट की मदद से किया गया है।

dkjd fo'y"k.k

उत्तरदाताओं के लिए डाकघर में संतुष्टि के स्तर की जानकारी प्राप्त करने के लिए कारक विश्लेषण का उपयोग किया गया था । गुणों का अध्ययन करने के लिए उपयोग किए गए कारक मैट्रिक्स को लागू किया गया है और इसकी उपयुक्तता जानने के लिए कारक विश्लेषण में सहसंबंध को मापने के लिए नमूना पर्याप्तता के केएमओ परीक्षण को कारक विश्लेषण में लागू किया गया है।

çofÙk fo'y"k.k

प्रवृत्ति विश्लेषण तकनीकी विश्लेषण का एक पहलू है जो भविष्य के आंदोलन की भविष्यवाणी करने की कोशिश करता है जो पिछले डेटा के आधार पर किसी आकडे के भविष्य प्रवृत्ति की भविष्यवाणी करने का प्रयास करता है।

v/; ;u dh vof/k

अध्ययन में डाक योजनाओं के प्रदर्शन के विश्लेषण के लिए 2015 से 2025 तक की दस वर्षों की अवधि को कवर किया गया और नमूना उत्तरदाताओं से अध्ययन की अवधि के दौरान संपर्क किया गया।

v/; ;u dh lhek,¡

1. यह अध्ययन केवल डाकघर बचत योजनाओं तक ही सीमित है।

2. इस अध्ययन का नमूना कोटा संभाग के जमाकर्ताओं में से नमूना व्यक्तियों तक सीमित रखा गया है।

3. यह अध्ययन पूरी तरह से उत्तरदाताओं और डाकघर कर्मचारियों द्वारा दी गई जानकारी पर आधारित है।

4. अध्ययन के निष्कर्ष किसी अन्य क्षेत्र पर लागू नहीं होते हैं।

v/;k; ;kstuk

वर्तमान अध्ययन छः अध्याय में प्रस्तुत किया गया है

v/;k; ,d अध्ययन का परिचय और डिजाइन, उद्देश्य, साहित्य की समीक्षा, कार्यप्रणाली का विवरण प्रस्तुत करता है।

v/;k; nks अध्याय क्षेत्र कोटा संभागका विवरण प्रस्तुत करता है।

v/;k; rhu अध्ययन से संबंधित शोध प्रविधि का विवरण प्रस्तुत करता है।

v/;k; pkj डाक योजनाओ के प्रदर्शन मूल्यांकन से संबंधित है।

v/;k; ikp डाक योजनाओ के प्रति जमाकर्ताओं के विश्लेषण से संबंधित है।

v/;k; N% अध्ययन पर आधारित निष्कर्ष एवम सुझाव का सारांश प्रस्तुत करता है।

lanHkZ

Books

- Agarwal. K, (1983), Post Office Administration, kalyani publishers, New Delhi.
- Attanasio. O, (1999), Consumption, in J. Taylor and M. Woodford, eds. Handbook of Macro Economics. Amsterdam: Elsevier Science B.V.
- Geoffrey Clarke, (1984), The Post Office of India and its story, Calcutta.
- Goldsmith. R. R, (1969), Financial structure and development, New Haven: Yale university.
- Gupta, S. P, (1995), Statistical methods, Sultan Chand and sons publications, New Delhi.
- Kothari. C. R, (2004), Research Methodology-Methods and Techniques, New Age International Publishers, New Delhi.
- Miami Bob, (2009), Sal Paradise in the Post Office, FL, United States
- Michael, J. Mazza, (2002), A nightmarish look at the postal service, Pittsburgh, USA.
- Mohini lal Mazumdar, (1990), The Imperial Post Offices of British India, Calcutta.
- Muhleisen. M, (1996), India - Policies to increase Domestic saving international monetary fund, Washington.
- Mulkraj Anand, (1987), Story of Indian Post office, A. K. Shah Printers, New Delhi.
- Noor Ahmed. H, (1995), India Post through ages - A saga of communications, New Delhi.

- Palande, P. S. Shah, R. S and Lunawat M. L, (2003), Insurance in India, Changing Policies and emerging opportunities, Response books, New Delhi.
- Pandit, B. L (1991), The Growth and structure of savings in India, Oxford university press, Bombay.
- Rutherford. S, (2000), The poor and their money, Oxford university press, Delhi.

Journals

- Md. Abdus Salam and Umma Kulsum, (2005), Savings Behaviour in India: An Empirical study, Applied Econometrics and International Development. AEID, Vol 5-1.
- Anand. M. B, DR Srinivas D. L, DR H. H. Ramesh, (2013), Performances of Indian Postal Services, Innovare journal of Business Management, Vol 1, issue 2.
- Yaya keho, (2010), The savings - Investment Relationship: Cointegration and causality Evidence from uemoa countries, International Journal of Economics and Finance, Vol. 2, No. 1.
- V. Ranganathan, (2005), Challenges in reform of the Indian Postal Service, Economic and Political Weekly, Sep 17.
- Mrs. K. Parimala Kanthi, (2013), Post Office Savings and its relevance in rural areas, International journal of Scientific research, vol. 2.
- N. S. Santhi, (2011), An analysis of investors Attitude towards Tax saving mutual funds in India, European journal of Economics, Finance and administrative sciences, issue 4.

Websites

- http:// india budget.nic.in.

- http://www. india post.gov.in.